दिगम्बर परम्परा के ग्रन्थ एवं समयसार

डॉ. पारसमल अग्रवाल

Dr. Paras Mal Agrawal

Visiting Professor & Research Prof. (Retd.)

Oklahoma State University

Stillwater OK 74078 USA, and

Professor of Physics (Retd.)

Vikram University, Ujjain MP India

दिगम्बर परम्परा में चार अनुयोग

(1) प्रथमानुयोग – 63 शलाका पुरूषों एवं महापुरूषों के चरित्र का वर्णन

पद्मपुराण (राम–चरित्र), पांडव पुराण, हरिवंश पुराण, तीर्थंकरों के चरित्र सम्बन्धि पुराण , आदि

(2) करणानुयोग – लोक का वर्णन, कर्म–सिद्धान्त का वर्णन, जीव वैविधता का वर्णन

गोम्मटसार जीवकाण्ड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड, तिलोयपण्णत्ति, तत्त्वार्थसूत्र, आदि

दिगम्बर परम्परा में चार अनुयोग

(3) चरणानुयोग – आचरण सम्बन्धित, आहार–विहार, अणुव्रत, महाव्रत आदि का वर्णन
तत्त्वार्थसूत्र, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, पुरूषार्थ सिद्ध्युपाय, नियमसार, मूलाचार, आदि

(4) द्रव्यानुयोग – 6 द्रव्यों का जीव द्रव्य की प्रधानता एवं प्रत्येक द्रव्य की अविनाशिता की प्रधानता से वर्णन
समयसार, प्रवचनसार, वृहदद्रव्यसंग्रह, आदि

समयसारः लेखक आचार्य कुन्दकुन्द

आचार्य कुन्दकुन्दः लगभग 2000 वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में जन्म, विदेहक्षेत्र गमन का उल्लेख दिगम्बर परम्परा के महान आचार्य

मंगल भगवान वीरो मंगल गौतमो गणी
मंगलं ..... , जैन धर्मोस्तु मंगलं।।

श्वेताम्बर परम्परा में **स्थूलभद्राद्यो**,

दिगम्बर परम्परा में **कुन्दकुन्दाद्यो**

आचार्य महाप्रज्ञ समयसार के लिये लिखते हैं।

"Jainism is seasoned with a mature tradition of metaphysics and spirituality. The name of *Acārya* Kundakunda shines like a resplendent constellation in the sky of this tradition. He was an author of many treatises, **one of which is *Samayasāra*, which is the most outstanding one in the field of spirituality.** It is replete with many mystical ideas and many thoughts worth contemplation."

Reference

मुनि महेन्द्र कुमारजी, समयसार ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद , लाडनूं से 2009 में प्रकाशित , page (iii)

मुनि महेन्द्रकुमारजी समयसार के लिये लिखते हैं।

"The ancient philosophical treatises which deal with the topic of deeper metaphysical and epistemological expositions have a very important place in the studies of Jain philosophy. *Ācārya* Kundakunda's *Samayasāra* can be considered as one of the most important of such treatises, as far as the Jain authors are concerned. It has the same value in Jain tradition as the treatises/scriptures like *Brahma Sutra* in the *Vaidika* tradition and *Visuddhimaggo* in the Buddhist tradition. **In short, we can say that for anyone to understand the essence of Jain philosophy, *Samayasāra* has to be studied.**"

Reference

मुनि महेन्द्र कुमारजी, समयसार ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद , लाडनूं से **2009** में प्रकाशित , page (v)

प्राचीन टीकाएँ (समयसार की) (संस्कृत में)

(1) नाम : आत्मख्याति, लेखक आचार्य अमृतचन्द्र
(2) नाम : तात्पर्यवृत्ति, लेखक आचार्य जयसेन

नवीनतम टीका (अंग्रेजी में) (गाथा 1 से 144)

नाम : Soul Science
लेखक डॉ. पारसमल अग्रवाल
Publisher: Kundakunda Gyanpith, Indore,
Published in 2014.

शब्द समयसार का अर्थ
शुद्ध आत्मा, शुद्ध आत्म तत्त्व

क्या वर्णित हुआ है? इसका उत्तर गाथा 5 में।

तं एयत्तविहत्तं दाएहं अप्पणो सविहवेण।
जदि दाएज्ज पमाणं चुक्केज्ज छलं ण घेत्तव्वं॥५॥

अर्थः (इस ग्रन्थ में) मैं एकत्व–विभक्त आत्मा को निज वैभव से दर्शाउंगा। यदि मैं दिखा सका तो स्वीकार करना, यदि चूक जाऊँ तो छल ग्रहण मत करना।

समयसार में किस तरह के कथन हैं? झलक हेतु कुछ गाथाओं को देखते हैं?

गाथा 6 :

ण वि होदि अप्पमत्तो ण पमत्तो जाणगो दु जो भावो।
एवं भणंति सुद्धं णादो जो सो दु सो चेव॥६॥

अर्थः ज्ञायक (आत्मा) न तो प्रमत्त होता है और न अप्रमत्त। इस प्रकार आत्मा शुद्ध है। ज्ञायक जो ज्ञात होता है वह (सदैव) वैसा ही है (एक जैसा)।

गाथा 15 :

जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अणण्णमविसेसं।
अपदेससंतमज्झं पस्सदि जिणसासणं सव्वं॥१५॥

जो आत्मा को अबद्धस्पृष्ट, अनन्य, एवं अविशेष देखता है वह सम्पूर्ण जिनशासन को देखता है। द्रव्यश्रुत एवं भावश्रुत युक्त।
प्रश्न : शरीर, परिवार, देश आदि से सम्बन्ध को स्वीकार किये बिना हमारा काम कैसे चल सकता है?

उत्तर : समयसार में आचार्य कुन्दकुन्द ने शरीर, परिवार, देश आदि से सम्बन्ध को भी यथायोग्य स्वीकारा है। जैन दर्शन का अनेकांत मुख्यतया इस तरह के गहन दार्शनिक बिन्दुओं के लिये बहुत आवश्यक है। व्यवहार नय शरीर, परिवार, देश से आत्मा का सम्बन्ध स्वीकार करता है। गाथा 15 के पूर्व गाथा 8 से 12 तक व्यवहार नय की आवश्यकता का वर्णन आचार्य कुन्दकुन्द ने किया है। अन्यत्र भी स्थान–स्थान पर अनेकान्त का उपयोग एवं दोनों नयों का उल्लेख किया है। गाथा 15 में जो कहा गया है वह निश्चय नय से है।

दोनों नयों को कुछ और समझने के लिये कुछ उदाहरण लेते हैं :

1. इस हवाईयात्रा में सीट नं. XX मेरी है। व्यवहार नय। सीट पर अधिकार बैठने के लिये व थोड़े समय के लिये है। इस जानकारी की उपयोगिता यह है कि अन्य व्यक्ति नहीं बैठेगा।

2. ऑफिस का यह कैबिन एवं इसमें रखा हुआ कम्प्यूटर मेरा है। (व्यवहार नय से)। इस जानकारी की उपयोगिता यह है कि अन्य इस कैबिन में कुछ दिन/माह/वर्ष नहीं बैठेगा। मालिक तो सेठ है या नियोक्ता है।

3. इस बैंक अकाउन्ट के रूपये मेरे हैं। यह मकान मेरा है। (व्यवहार नय)

4. यह शरीर मेरा है।

5. अभी जो क्रोध के भाव हुए थे उसके लिये मैं जिम्मेदार हूँ वे भाव मेरे थे (व्यवहार नय या अशुद्ध निश्चय नय)

6. जो पवित्रता एवं शुद्धता भगवान महावीर ने प्राप्त की वह शुद्धता उस आत्मा की है (व्यवहार नय या शुद्ध निश्चयनय)

7. मैं अविनाशी आत्मा हूँ। जो अविनाशी है उस पर ही मेरा स्वामित्व है। जो जाता और आता है उस पर मेरा स्वामित्व नहीं। मेरा है सो जावे नहीं। जावे सो मेरा नहीं। (परम शुद्ध निश्चय नय)

लाभः हर कथन की वैधता की सीमा पहचानना। सत्य समझ के लिये यह आवश्यक है। सत्य ही शिव व सत्य ही सुन्दर होता है इसको भी समझने का प्रयत्न उपयोगी हो सकता है।

व्यवहार नय के कथन भी उपयोगी हैं। कौन कौनसी सीट पर बैठेगा इस उद्‌देश्य से कहा जाता है कि सीट नं. XX आपकी है। इसके अभाव में या तो कथन बहुत लम्बे हो जायेंगे या अराजकता हो सकती है।

इसी सूची में 1 से 6 तक का स्वामित्व स्तर 7 को समझने में सहायक होता है। जब तक सहायक है तबतक स्वीकार्य है। ध्यान अवस्था में सत्य स्वामित्व की स्वीकृति एवं एहसास/अनुभव शान्तिदायक एवं निर्जरा का कारण बनता है। सच्ची समझ होने के बाद ही सम्यग्दर्शन या धर्म का सच्चा प्रारम्भ कहलाता है।

गाथा 27 :

ववहारणओ भासदि जीवो देहो य हवदि खलु एक्को।
ण दु णिच्छयस्स जीवो देहो य कदा वि एक्कट्ठो॥२७॥

व्यवहार नय कहता है कि जीव एवं देह एक ही हैं।
किन्तु निश्चयनय के अनुसार जीव एवं देह कभी भी एक नहीं हैं। (27)

Analogy

व्यवहार नय कहता है कि सीट आपकी है
किन्तु निश्चयनय के अनुसार सीट आपकी नहीं है

गाथा 38 :

अहमेक्को खलु सुद्धो दंसणणाणमइयो सदारूवी।
ण वि अत्थि मज्झ किंचि वि अण्णं परमाणुमेत्तं पि॥३८॥

वस्तुत, मैं सदैव एक, शुद्ध, अदृश्य एवं ज्ञानदर्शनमय हूँ।
अन्य वस्तु का एक परमाणु भी मेरा नहीं है।

गाथा 51 :

जीवस्स णत्थि रागो ण वि दोसो णेव विज्जदे मोहो।
णो पच्चया ण कम्मं णोकम्मं चावि से णत्थि॥५१॥

राग, द्वेष, मोह, प्रत्यय, कर्मवर्गणा, नोकर्म (शरीर आदि) भी जीव के नहीं है।

गाथा 73 :

अहमेक्को खलु सुद्धो णिम्ममओ णाणदंसणसमग्गो।
तम्हि ठिदो तच्चित्तो सव्वे एदे खयं णेमि।।७३।।

वस्तुतः, मैं एक, शुद्ध, (परद्रव्य एवं राग–द्वेष से) ममता रहित, ज्ञान–दर्शनमय हूँ। इसी में स्थित होकर लीन रहते हुए इन समस्त (आस्रवों) का क्षय करता हूँ।

मूल बिन्दु : पूर्व सूची के 7वें स्तर की स्वीकृति कर्म क्षय का मार्ग बनती है।

प्रश्न : जब तक लीन नहीं रह सकते हो तब तक क्या हमें परोपकार आदि नहीं करना चाहिये?

उत्तर : स्वयं का भी भोजन करना होता है व अन्य का उपकार करने के भाव भी होते हैं, प्रैरणा भी मिलती है, प्रेरणा देना भी चाहिये, किन्तु परोपकार करने के बाद कर्तृत्व का अहंकार कि 'मैंने ऐसा किया' मिथ्यात्व का पाप बन सकता है। अतः सब करते हुए भी कर्तृत्व का अहंकार या कर्तृत्व के प्रति स्वामित्व न होना यह गृहस्थ भूमिका में भी संभव हैं।

गाथा – 320 :

दिट्ठी जहेव णाणं अकारयं तह अवेदयं चेव।
जाणइ य बंधमोक्खं कम्मुदयं णिज्जरं चेव॥३२०॥

आत्मा तो नेत्र की तरह है जो किसी भी घटना की कारक व भोक्ता न होकर दर्शक है। आत्मा तो कर्मोदय, कर्म–निर्जरा, कर्म–बन्ध, मोक्ष का कारक व भोक्ता न होकर ज्ञाता–दृष्टा मात्र है।

गाथा 413 :

पासंडीलिंगेसु व गिहिलिंगेसु व बहुप्पयारेसु।
कुव्वंति जे ममत्तिं तेहिं ण णादं समयसारं॥४१३॥

जिन्हें गृहस्थी लिंग या मुनिलिंग को ग्रहण कर लिंग के प्रति आसक्तिभाव है उन्होंने समयसार को (आत्म तत्व को) नहीं समझा है।

गाथा 415 :

जो समयपाहुडमिणं पढिदूणं अत्थतच्चदो णादुं।
अत्थे ठाही चेदा सो होही उत्तमं सोक्खं॥४१५॥

जो आत्मा इस समयपाहुड़ ग्रन्थ को पढ़कर, अर्थ और तत्त्व से जानकर अर्थ में स्वयं को स्थापित करेगा वह आत्मा उत्तमसुख होगा।
(Note the wordings. The soul becomes bliss.)

सांराश : इस ग्रन्थ का सारांश कुछ ही पंक्तियों में संभव नहीं है। कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु निम्नानुसार ध्यान देने योग्य हैं।
*सभी आत्माएँ मूलतः समान हैं।

* सफलता एवं असफलता के समस्त बाहरी निशान अस्थायी हैं।

* सच्चा ज्ञानी बाहरी परिग्रह को या आन्तरिक परिग्रह को आत्मा से भिन्न समझता है।

* प्रत्येक आत्मा अपने आप में पूर्ण है, उसको पूरा करने के लिये कुछ नया मिलाने की आवश्यकता नहीं है।

नोट :– आत्मा और परिग्रह का भेदज्ञान हमारे दैनन्दिन कार्यों में रोड़ा न होकर लाभदायक भी बन सकता है।

व्यावहारिक उपयोग का एक उदाहरण

Official Life एवं Personal Life

एक कम्पनी या देश के CEO को निम्नांकित दो बातों को नहीं भूलना चाहिये।

(I) कम्पनी की सम्पत्ति एवं व्यक्ति की सम्पत्ति का अन्तर

(II) कम्पनी का कार्य कुछ समय छोड़कर कुछ समय अपने घर पर आकर अपने परिवार एवं स्वयं को देना चाहिये।

यह व्यक्ति के हित में भी है व कम्पनी के हित में भी है।

व्यावहारिक उपयोग : एक उदाहरण

Personal Life एवं Spiritual life

अपनी 'व्यक्ति' रूपी कम्पनी के CEO के रूप में कार्य करते हुए निम्नांकित दो बातों को नहीं भूलना चाहियेः–

(I) शरीर–दिमाग आदि की सम्पत्ति एवं आत्मा की सम्पत्ति का अन्तर,

(II) व्यक्ति रूपी कम्पनी का कार्य कुछ समय छोड़कर अपने Spiritual home में आकर स्वयं अपने Soul एवं Soul के परिजन (देव एवं गुरू) के साथ कुछ समय व्यतीत करना (Meditation, Prayer आदि)।

इससे व्यक्ति रूपी कम्पनी को भी लाभ होगा व आत्मिक विकास भी।

Bibliography

1. *Ācārya Kundakunda's Samayasāra*, with Hindi and English Translation, by Vijay K. Jain (Vikalp Printers, Deharadun, 2012).
2. *Ācārya Kundakunda's Samayasāra*, Commentary in Hindi by Aryika Gyanmati Mataji (Digamber Jain Trilok Shodha Samsthan, Hastinapur, UP, 1990).
3. *Ācārya Kundakunda's Samayasāra*, commentary in Hindi by *Ācārya* Gyansagaraji with translation of stanzas in Hindi-verses by *Ācārya* Vidhyasagaraji (Shri Digamber Jain Seva Samiti and Sakal Digamber Jain Samaj, Ajmer, 1994).
4. *Pravacana Ratnakara*, Part 1 to 11, Lectures delivered by Shri Kanji Swami on *Samayasāra*; translated by Pt. Ratan Chandji Bharill in Hindi (Pundit Todarmal Smarak Trust, Jaipur, 1981).
5. *Ācārya Kundakunda's Samayasāra*, commentary in Gujarati by Himmatlal Jethalal Shah and its Hindi translation by Pundit Parmesthidasji, (Shri Digamber Jain Swadhya Mandir, Songarh, Gujarat, 1974).

6. (a) *Ācārya Kundakunda's Samayasāra*, Commentary in Hindi by Pundit Dr. Hukum Chandji Bharill (Pundit Todarmal Sarvodaya Trust, Jaipur, 2007)

(b) *Samayasāra Anushīlan*, Commentary in Hindi by Pundit Dr. Hukum Chandji Bharill (Pundit Todarmal Smarak Trust, Jaipur, 1995).

7. *Ācārya Kundakunda's Samayasāra*, Edited by Pundit Hemchandji Jain 'Hem', (Paras Mulchand Chatar Chritable Trust, Kota, 2010).

8. *Ācārya Kundakunda's Samayasāra*, Edited by Pundit Pannalalji Jain (Shri Paramshrut Prabhavak Mandal, Shrimad Rajchandra Ashram, Agaas, Gujarat, 1997).

9. *Ācārya Kundakunda's Samayasāra*, Commentary and translation in English by Shri Jethalal S. Zaveri and Muni Mahendra Kumarji (Jain Vishva Bharati University, Ladnun, Rajasthan, 2009).

10. *Ācārya Kundakunda's Samayasāra*, Commentary and translation in English by Professor A. Chakravarti (Bharatiya Jnanpith, New Delhi, 1989).
11. *Ācārya Kundakunda's Samayasāra*, Commentary and translation in English by J. L. Jaini (Sacred books of the Jainas, Vol. VIII, The Central Jain Publishing House, Ajitashram, Lucknow, UP, 1930)
12. *Samayasāra*: *Niscaya Aur Vyavahāra Kī Yātrā*, *Ācārya* Mahaprajna (Jain Vishva Bharati Prakashan, Ladnun, Rajasthan, 1991).
13. *Ācārya Kundakunda's Samayasāra*, Commentary and translation in English as 'Soul Science Part I' by Paras Mal Agrawal (Kundakunda Gyanpith, Indore, 2014).

THANK YOU

For comments e-mail to :

parasagrawal@hotmail.com